**Today’s Poem – 04.10.2014**

**बाप की याद के साथ-साथ ज्ञान धन से सम्पन्न बनना**

**बुद्धि में सारा ज्ञान घूमाकर सदा अपार ख़ुशी में रहना**

**जो रौरव नर्क में रहने वाले विकारों से प्रीत करते**

**ऐसे मनुष्य बाप से प्रीत नहीं करते**

**जैसे रावण को सतयुग में आने का हुक्म नहीं**

**ऐसे बाबा कहते बच्चे मुझे भी सतयुग में आने का हुक्म नहीं**

**किसी भी बड़े आदमी के सामने निर्भयता (भभके) से बात करनी है, फंक नहीं होना**

**देही अभिमानी बनना**

**एक बाप का सहारा ही छत्रछाया है**

**ओम् शान्ति**

**मेरा बाबा**

****